ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 18 कुल पृष्ठ-8 7 से 13 दिसम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 पौ. कृ.-04

आर्य समाज देवनगर, दिल्ली के 57वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की रही धूम

आर्यजनों को दिलवाये गये विशेष संकल्प

आर्य समाज मंदिर, देवनगर, नई दिल्ली का 57वाँ वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2017 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा वैदिक विद्वान स्वामी आर्यवेश जी के प्रातः एवं सायं प्रभावशाली प्रवचनों को सुनने के लिए भारी संख्या में लोग उमड़े। इस चार दिवसीय उत्सव में चतुर्वेद शतकीय यज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसका संयोजन आर्य समाज के धर्माचार्य श्री प्रदीप शास्त्री ने किया तथा श्री गौरव शास्त्री ने वेद पाठ में सहयोग दिया। भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के प्रधान एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क की पार्टी द्वारा विभिन्न विषयों पर भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसे श्रोताओं ने अत्यन्त पसन्द किया। उत्सव के दौरान आर्य महिला सम्मेलन एवं आर्य बाल सम्मेलन का भी विशेष आयोजन किया गया था। इन आयोजनों में महिलाओं एवं बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। बच्चों के लिए प्रतियोगिता भी रखी गई जिसमें संन्ध्या के मंत्र सुनाने, स्वामी दयानन्द के चित्र बनाने एवं उनके जीवन चरित्र पर लेख लिखने के विषय रखे गये थे। बच्चों को पुरस्कार व पुस्तकें आदि भी भेंट की गईं। रविवार दिनांक 3 दिसम्बर, 2017 को यज्ञ की पूर्णाहुति पर स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित जनसमूह को प्रतिदिन संन्ध्या करने, अमावस्या व पूर्णमासी को यज्ञ करने तथा नशीले पदार्थों एवं अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प दिलवाया। संकल्प की भाषा निम्न प्रकार थी :–

"मैं ईश्वर को साक्षी मानकर संकल्प करता हूँ/करती हूँ कि मैं प्रतिदिन –

1. प्रातः एवं सायं संन्ध्या किया करूँगा/करूँगी।

2. प्रति अमावस्या एवं पूर्णमासी को वैदिक देवयज्ञ किया करूँगा/करूँगी।

3. किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों एवं अभक्ष्य पदार्थों (अण्डे, माँस, नशा आदि) का सेवन नहीं करूँगा/करूँगी।

इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से समाज के प्रधान श्री सुशील बाली ने घोषणा की कि साप्ताहिक यज्ञ के अतिरिक्त आर्य समाज में अमावस्या व पूर्णमासी को भी यज्ञ हुआ करेगा। उन्होंने कहा कि जिन महानुभावों को अपने घर पर यज्ञ करने में कठिनाई होती हो वे आर्य समाज में होने वाले यज्ञ में सम्मिलित हो सकते हैं।

चार दिवसीय उत्सव का सम्पूर्ण संयोजन समाज के प्रधान श्री सुशील बाली एडवोकेट ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। उनके अतिरिक्त मंत्री श्री रमेश बेदी, कोषाध्यक्ष श्री राजेश दीवान ने भी उत्सव की सफलता के लिए विशेष पुरुषार्थ किया। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती प्रेमलता नंन्दा, मंत्राणी श्रीमती उर्मिला शर्मा, कोषाध्यक्षा उमा आर्या एवं श्रीमती मीनाक्षी बाली, श्रीमती पूनम देवी, श्रीमती श्वेता आदि ने भी व्यवस्था में विशेष सहयोग किया। समाज के अनुभवी सेवक श्री रामबिलास आर्य ने उत्सव को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम करके विशेष प्रशस्ति उपलब्ध की।

समापन के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय

अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, आर्य समाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा, आर्य समाज किशनगंज के प्रधान श्री बागीश शर्मा, आर्य समाज अशोक विहार, फेस–2 के मंत्री श्री राकेश बेदी, आर्य समाज बिरला लाइन्स, आर्य समाज माडल बस्ती एवं आर्य समाज हौज खास के भी प्रतिनिधि कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। श्री सतीश खण्डेलवाल, श्री विजय कुमार मंगला, डॉ. वेद प्रकाश आर्य, श्री मुकेश सब्बरवाल, श्री दयानन्द, श्री हरगोविन्द तिवारी, श्री गौरव बेदी, डॉ. श्रुति दीवान, श्री एस. सी. घई आदि का भी विशेष सहयोग रहा।

उत्सव के दौरान स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने बड़ी सरल भाषा एवं व्यवहारिक उदाहरणों व दृष्टान्तों द्वारा अपने विचारों को श्रोताओं के मस्तिष्क में उतारने का सफल प्रयास किया। स्वामी जी ने कर्मफल, पुनर्जन्म, मनुर्भव आदि गम्भीर विषयों को अत्यन्त सरल तरीके से प्रस्तुत किया जिसे श्रोताओं ने अत्यन्त पसन्द किया। स्वामी आर्यवेश जी ने समापन सत्र में सभी आर्य समाजों का आह्वान किया कि वे अपने–अपने आर्य समाजों को एवं आर्य समाज मंदिरों को आम जनता के लिए उपयोगी बनायें। स्वामी जी ने आर्य समाज मंदिरों को सातों दिन खुला रखने तथा किसी न किसी गतिविधि के माध्यम से सक्रिय रखने का सुझाव दिया। विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा जनसामान्य अपेक्षा रखता है कि उसे सहायता मिले। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को उसकी मदद के लिए आगे आना चाहिए और आर्य समाज मंदिरों को लोगों की समस्याओं के समाधान का केन्द्र बनाना चाहिए। स्वामी जी ने सप्तक्रांति के मुख्य बिन्दुओं की चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान में भारत की जनता जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न एवं शोषण आदि ज्वलन्त समस्याओं से त्रस्त है। आर्य समाज उपरोक्त समस्याओं के विरुद्ध स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक जन–आन्दोलन एवं अभियान चलाये तथा लोगों को आश्वस्त करे कि आर्य समाज ही उनकी समस्याओं के प्रति सजग प्रहरी की भूमिका निभा रहा है। देश के युवा वर्ग को आर्य समाज में दीक्षित करने के लिए आवश्यक है कि युवाओं के लिए उपयोगी एवं आकर्षक कार्यक्रम आर्य समाज मंदिरों में आयोजित किये जायें और उन्हें आकर्षक पारितोषिक देकर प्रोत्साहित किया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा दी गई मनुष्य की परिभाषा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को मनुष्य की परिभाषा के अनुरूप अपना व्यवहार बनाना चाहिए और प्राणी मात्र के प्रति सहृदयता एवं मित्रता का भाव रखना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने मनुष्य की परिभाषा देकर कहा था कि **"मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझें। अन्यायकारी बलवान से भी न डरें और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं, चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसे कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।"**

चार दिन का यह उत्सव अत्यन्त प्रभावशाली एवं आकर्षक रहा। आर्य समाज के अधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी का विशेष आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी मार्गदर्शन देते रहने का आग्रह किया। समाज के प्रधान श्री सुशील बाली एडवोकेट ने सभी आगन्तुक महानुभावों का विशेष आभार जताया। इस कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी रही कि इसमें प्रातः एवं सायं दोनों समय ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी जिससे निश्चिन्त होकर लोग अपना पूरा समय देते थे और लाभान्वित होते थे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

बाल सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता तथा पारितोषिक वितरण समारोह का भिवानी में किया गया भव्य आयोजन

1800 मेधावी छात्र/छात्राओं ने लिया समारोह में भाग

शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन किया जाये

– स्वामी आर्यवेश

स्वाध्यायशील तथा मननशील बनते हुए सच्चाई को अपने जीवन का अंग बनायें

– ठा. विक्रम सिंह

जिला वेद प्रचार मण्डल भिवानी के तत्वावधान में राधा स्वामी सत्संग भवन के प्रांगण में बाल सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता तथा पारितोषिक वितरण समारोह का अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 1800 मेधावी छात्र/छात्राओं ने अत्यन्त उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का विधिवत प्रारम्भ वैदिक प्रार्थना के वाचन के साथ किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। स्वामी जी के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध आर्यनेता ठा. विक्रम सिंह जी, स्थानीय विधायक श्री घनश्याम सर्राफ, डॉ. मदन मानव और गुरुकुल धीरणवास हिसार के संस्थापक वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी भी बच्चों को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए उपस्थित थे। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान गुरुकुल पंचगांव की बेटियों ने प्राप्त किया। प्रथम पुरस्कार कु. कविता सुपुत्री श्री सुरेश गुरुकुल पंचगांव, द्वितीय पुरस्कार कु. सीमा आर्या सुपुत्री श्री मुकेश तथा तृतीय पुरस्कार कु. मनीषा सुपुत्री अनिता ने प्राप्त किया तथा सांत्वना पुरस्कार वैश्य माडल स्कूल भिवानी के बच्चों ने जीता।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज के माध्यम से लगने वाले बहुउद्देश्यीय शिविरों का ही यह परिणाम है कि हरियाणा तथा पूरे देश में बच्चे और युवा बहुत बड़ी संख्या में संस्कारित हो रहे हैं तथा अन्य लोग भी धीरे–धीरे वैदिक संस्कृति की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज पूरे हरियाणा में वैदिक संस्कृति के महान रक्षक भगवान श्रीकृष्ण जी के ज्ञान तथा चरित्र से लोग प्रेरणा ले रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि आज हरियाणा में गीता महोत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जा रहा है और लोगों में चित्र की जगह चरित्र की पूजा का प्रचलन बढ़ रहा है। उन्होंने सरकार से यह माँग की कि हरियाणा के स्कूलों के पाठ्यक्रम में आर्ष ग्रन्थों को भी शामिल किया जाये जिससे बच्चों में सुसंस्कार आयें और बच्चे संयमी, सदाचारी और अध्यात्म से ओत–प्रोत हो सकें। इस प्रक्रिया से वे जीवन के हर क्षेत्र में हर कठिनाई का मुकाबला करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे। उन्होंने जिला वेद प्रचार मण्डल के इस प्रयास की सराहना की और बताया कि बच्चों को किस प्रकार कठिन परिस्थितियों में स्वामी दयानन्द जी के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' से प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि आज बेटियों को जो सम्मान दिया जा रहा है यह स्वामी दयानन्द जी की शिक्षाओं का ही प्रतिफल है जो आज पूर्ण रूप से पल्लवित हो रहा है। स्वामी जी ने वर्तमान शिक्षा पद्धति की कमियों की ओर इशारा करते हुए कहा कि वर्तमान शिक्षा पद्धति को बदलकर इसमें आमूल–चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर गुरुकुल के स्नातक तथा प्रसिद्ध दानी आर्य नेता ठा. विक्रम सिंह जी ने बताया कि 1857 की क्रांति के सूत्रधार आर्य समाज के ही चार वरिष्ठ संन्यासी थे। उन्हीं के सद्प्रयासों से और कठिन परिश्रम से यह क्रांति की ज्वाला आगे बढ़ी और आज हम आजादी की सांस ले रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे सच्चाई को अपने जीवन का अंग बनायें और निरन्तर स्वाध्याय करते हुए मननशील बनें। उन्होंने बताया कि शिक्षा का जो वास्तविक उद्देश्य है शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति करना उससे आजकल की स्कूली शिक्षा पूरी तरह वंचित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्राचीन वैदिक शिक्षा का समावेश अत्यन्त जरूरी हो गया है।

करनाल से आई बहन अंजलि आर्या ने अपने भजनों के माध्यम से विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया। मंच का संचालन आचार्य महेश जी ने अत्यन्त कुशलता के साथ निभाया तथा कार्यक्रम के संयोजक सुभाषचन्द्र तथा आशीष आर्य ने आये हुए अतिथियों का धन्यवाद किया तथा स्वागताध्यक्ष शेर सिंह आर्य एवं डॉ. मदन मानव ने भी बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया। अन्त में बच्चों को दूध और जलेबी का प्रसाद वितरित किया गया। सभी विजयी छात्रों को नगद पुरस्कार, स्मृति चिन्ह तथा वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

समारोह को सफल बनाने में आशीष आर्य–भिवानी, डॉ. भूपसिंह आर्य, रिटायर्ड एस.डी.एम. श्री इन्दर सिंह आर्य व जिला वेद प्रचार मण्डल के कार्यकर्ताओं का भरपूर सहयोग रहा।

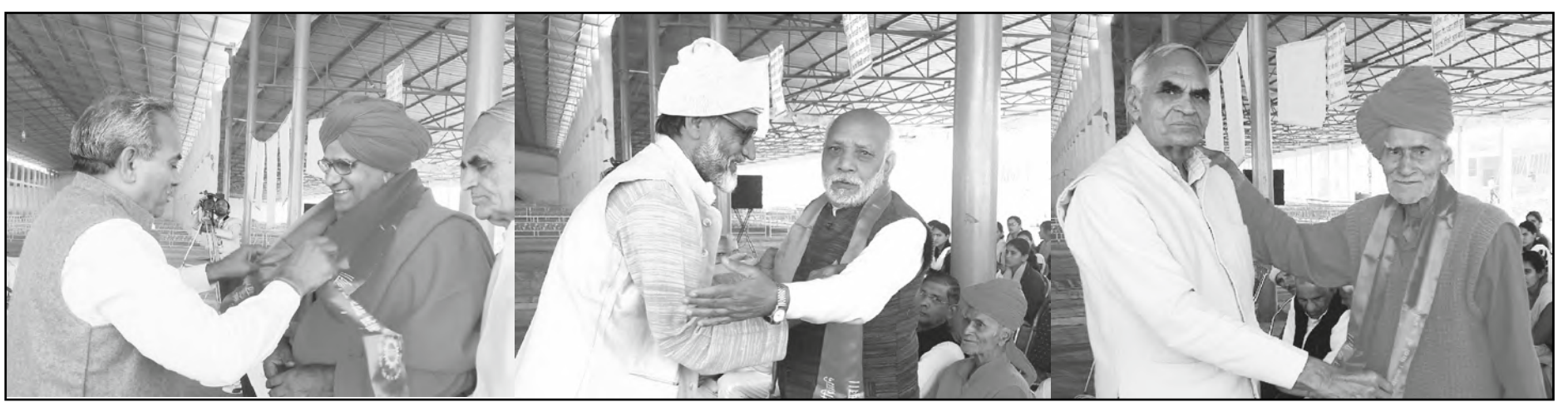

आर्य समाज फरमाणा के तत्वावधान तथा युवा निर्माण अभियान व बेटी बचाओ अभियान के सहयोग से तीन दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

सप्त क्रांति आंदोलन तेज करेगा आर्य समाज

– स्वामी आर्यवेश

युवाओं को नशे की लत से बचाने तथा संस्कारित करने के लिए इस प्रकार के शिविर अधिक से अधिक आयोजित किये जाने चाहिए

– मनीष ग्रोवर

बेटियों को समाज की मानसिकता ने छोटा बनाया परमात्मा ने नहीं

– पूनम आर्या

कन्याओं के मनभावन व्यायाम प्रदर्शन को देखकर रोमांचित हुए ग्रामीण

दिनांक 1 दिसम्बर, 2017 को आर्य समाज फरमाणा के तत्वावधान में तथा युवा निर्माण अभियान व बेटी बचाओ अभियान के सहयोग से गाँव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कन्या चरित्र निर्माण व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशेष यज्ञ करके शिविर का प्रारम्भ किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान डॉक्टर राजेश आर्य व मनोज पहलवान जिला पार्षद रहे। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुये कहा कि हमें स्वयं के ऊपर विश्वास रखकर समाज में कार्य करना चाहिए। समाज में विकृत मानसिकता के लोगों ने बेटियों को छोटा बनाया जबकि परमात्मा ने बेटी व बेटे में कोई अंतर ना करके उन्हें बराबर बनाया है।हमें परमात्मा के आदेशानुसार कार्य करना चाहिए। आज स्वयं बेटियां आगे बढ़कर अपने आप को साबित कर रही हैं। हर क्षेत्र चाहे वो खेल, समाज, धर्म या राजनीती ही क्यों ना हो बहनों ने अपना लोहा मनवाया है।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि समाजसेवी सौरभ फरमाना ने कहा कि आज माँ, बहन व बेटी के मान सम्मान व स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए समाज के हर वर्ग को आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि देश का गौरव बढ़ाने में बहनों ने विशेष भूमिका निभाई है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि माँ का स्थान समाज में सर्वोपरि रहा है,इसलिए इस स्थान को बरकरार रखने के लिए महिलाओं को अपनी मर्यादाओं का पालन करना होगा। एक मर्यादित माँ ही समाज में अच्छी संतान का निर्माण करके देश को राष्ट्रभक्त व संस्कारित नौजवान दे सकती है।

आर्य समाज फरमाना के प्रधान श्री नफे सिंह आर्य ने कहा कि इस प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्त्ताओं को समाज में कन्या भ्रूण हत्या व सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के लिए तैयार किया जा रहा है।

कन्या चरित्र निर्माण व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन गाँव में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक अंधविश्वास के विरुद्ध जन जागरण यात्रा निकाली गई। इस यात्रा को नवाब व गाँव के सरपंच सुभाष ने ओ३म् ध्वज दिखा कर रवाना किया। 500 कन्याओं ने गाँव को नारों से गुंजा दिया जिनमे मुख्य नारे– बेटी को मरवाओगे तो कृष्ण कहाँ से लाओगे। बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं। वेदों का है ये ऐलान बेटा बेटी एक समान।

कार्यक्रम की संयोजक तथा बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने बताया कि बेटियों को स्वयं सुरक्षा व स्वाभिमान से जीने की कला सिखाने का यह सिलसला निरंतर जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि आज जब बेटियाँ कमांडो सहित योग के स्तूप, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, कराटे व लाठी का प्रशिक्षण ले रही थीं तो एक विशेष अनुभूति हो रही थी।

जिला पार्षद ऋतु फरमाना ने कन्याओं को कहा कि आप समाज परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं,बस जरुरत है अपने अंदर की ऊर्जा को पहचान कर उसका सदुपयोग करने की।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में आयोजित तीन दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 3 दिसम्बर, 2017 को सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की जबकि मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार में सहकारिता मंत्री श्री मनीष ग्रोवर रहे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा की आज बेटियों को सिर्फ इस मानसिकता के चलते ज्यादा मारा जा रहा है कि वंश बेटियों से नहीं बेटों से चलता है। लेकिन वो लोग भूल जाते हैं कि वंश को आगे बेटियाँ ही बढाती हैं। उन्होंने कहा की यदि हम एक सुंदर समाज बनाना चाहते हैं तो हमें बेटियों व बेटों को संस्कारित करना होगा। क्योंकि वंश उनके चलते है जिनकी संतान संस्कारित होती हैं। उन्होंने बेटे व बेटियों को समान अवसर प्रदान करने का आह्वान भी किया। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज सप्तक्रांति आंदोलन समाज के अन्य लोगों को साथ लेकर तेज करेगा। जिसके आधार पर जातिवाद मुक्त समाज, साम्प्रदायिकता मुक्त समाज, पाखण्ड मुक्त समाज, नारी उत्पीड़न मुक्त समाज, नशा मुक्त समाज, शोषण मुक्त समाज,भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना करना मुख्य उद्देश्य हैं।

शिविर में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए हरियाणा के सहकारिता मंत्री श्री मनीष ग्रोवर ने कहा कि युवाओं को नशे से बचाना है तो इस तरह के युवा निर्माण शिविरों का आयोजन ज्यादा से ज्यादा होना चाहिए।उन्होंने माता पिता के चरण स्पर्श करने,पेड़ लगाने, स्वच्छता अपनाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर श्री मनोज फरमाणा ने कहा की आज शिक्षा के साथ संस्कार देने की भी जरुरत है। तभी ये युवा समाज के अच्छे नागरिक बन सकेंगे।

रीमा आर्या, सुमन आर्या, राजकुमारी आर्या, एकता आर्या, मोनिका आर्या, अंजलि आर्या आदि प्रशिक्षिकाओं की टीम ने शिविर में योगासन, सर्वांगसुंदर व्यायाम, जुडो कराटे व लाठी चलाना, स्तूप निर्माण आदि का प्रशिक्षण दिया।

शिविर में शिविरार्थियों व ग्रामीणों के अतिरिक्त कई अन्य गावों के आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। आर्य समाज के अधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी व मंत्री श्री मनीष ग्रोवर जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सौरभ फरमाना, आजाद कुंडू, पूनम देवी सरपंच, ऋतु देवी पार्षद, सुभाष ठेकेदार, आदि ने भी सभा को सम्बोधित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के प्रधान श्री नफे सिंह आर्य, गाँव के मुखिया श्री जयसिंह आर्य, डॉ राजेश आर्य, डॉ. सतबीर, राजेन्द्र आर्य, राजबीर योगाचार्य श्री संत लाल, मोनिका आर्या, सुमन आर्या, प्रिं. नसीब सिंह, ईश्वर पार्षद, धर्मबीर, दिनेश, रत्न सिंह, अजीत अहलावत आदि का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

फरमाणा में तीन दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर की चित्रमय झलकियाँ

एस.एस.डी.ए.वी. स्कूल अवांखा का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

युवाओं को नशे से बचाने के लिए सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं आगे आएं

– स्वामी आर्यवेश

भगत सिंह हों युवाओं के आदर्श– कर्नल स्वतंत्र कुमार

माँसाहार को छोड़कर शाकाहार की तरफ आएं– आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य

दीनानगर के अवांखा स्थित एस.एस. डी.ए.वी. स्कूल का दो दिवसीय वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा मुख्य अतिथि गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति कर्नल स्वतंत्र कुमार जी रहे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्धबोधन में कहा कि आज देश का युवा नशे के चंगुल में फंसता जा रहा है। नशा वह घातक बीमारी है जिसके परिणामस्वरूप परिवार, समाज तथा देश को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित होकर हमारा युवा वर्ग आज पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। वह अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है तथा नशे की पूर्ति के लिए अवांछित कार्यों को कर रहा है। नशे के कारण परिवार बर्बाद हो रहे हैं और इस घोर संकट की ओर किसी भी संस्था और सरकार का ध्यान नहीं जा रहा है। आर्य समाज ही मात्र एक ऐसी संस्था है जो इस बुराई को जड़–मूल से समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। स्वामी जी ने अत्यन्त दुःख के साथ कहा कि पंजाब में भी नशे की जड़ें अत्यन्त गहरी होती जा रही हैं। पंजाब देश की महान हस्तियों के लिए जाना जाता है। स्वामी दयानंद के गुरु स्वामी विरजानन्द दंडी, गुरु गोविंद सिंह, स्वामी श्रद्धानंद, स्वामी सर्वानंद, शहीदे आजम भगत सिंह आदि महान लोगों का नाता इस मिट्टी से रहा है। लेकिन आज इस मिट्टी की खुशबू में नशे का जहर घोला जा रहा है। स्वामी जी ने सभी धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं का आह्वान किया कि पंजाब सहित पूरे देश में नशे के खिलाफ एक होकर के आंदोलन करें। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री का आह्वान किया कि वो पंजाब में पूर्ण नशाबंदी की पहल करें व देश के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करें।

मुख्य अतिथि श्री स्वतंत्र कुमार जी ने भारत माँ के लाडले बेटे भगत सिंह का जिक्र किया तथा कहा कि आज युवाओं को भगत सिंह सरीखे युवाओं को अपना आदर्श मानना चाहिए ना कि आजकल के फिल्मी हीरो व हीरोइन को। जब वीर क्रांतिकारी बलिदानी व्यक्ति हमारे युवाओं के आदर्श होंगे तभी शहीदों के सपने पूरे किए जा सकते हैं। आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य के कहा कि आज विश्व मांसाहार रहित दिवस पर सभी को मांसाहार त्यागने व शाकाहार को अपनाने का संकल्प लेना चाहिए।

एस.एस. डी.ए.वी. स्कूल अवाखां दीननागर के प्रधान अरविंद मेहता ने कहा कि हमारी प्राथमिकता शिक्षा के साथ संस्कारों की रहती है। हमारे विद्यालय के बच्चों को नैतिकता ,देशभक्ति, आध्यत्म से ओत–प्रोत किया जाता है। डी.ए.वी. की प्राचार्या श्रीमती कमलेश शर्मा ने विद्यालय की प्रगति रिपोर्ट पढ़कर सुनाई व 96 प्रतिशत अंक लेने वाली छात्रा का विशेष जिक्र किया। बचपन किड्स केयर इंटरनेशनल की प्रिंसिपल श्रीमती रेनू कश्यप ने बताया कि दो दिवसीय समारोह में बचपन किड्स केयर के लगभग 500 बच्चों ने व डी.ए.वी. के लगभग 400 बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। जिसमे बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ की लघु नाटिका व भगत सिंह पर प्रस्तुत नाटक आकर्षण का केंद्र रहे। इसके अतिरिक्त पंजाब का लोक नृत्य गीधा, राजस्थान का घूमर व हिमाचल का लोक गीत भी प्रस्तुत किये गए। मंच का संचालन लालिमा व मुन्नी देवी सहित विद्यालय के छात्र व छात्राओं ने किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, कर्नल स्वतंत्र कुमार जी, अरविंद मेहता जी, मधुरभाषिणी मेहता, कमलेश शर्मा, रेणु कश्यप, तरसेम आर्य, जितेंद्र त्रेहन, डोगरा, अवतार कृष्ण गुप्ता, संदीप ठाकुर, गीता ठाकुर, सरपंच अवांखा, दीपक महाजन, सुमति व सुमेधा, राजन मेहता, भूमिका आदि ने प्रतिभावान छात्राओं को पारितोषिक प्रदान किये। प्रबंध समिति की ओर से सभी अतिथियों को शाल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

जीन्द चलो! ओ३म् जीन्द चलो!!

स्वामी श्रद्धानन्द व पं. रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति में,
कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, भ्रष्टाचार एवं
धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द

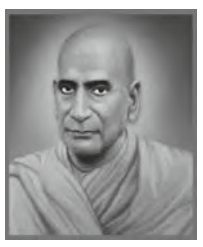

दिनांक : 10 दिसम्बर, 2017, प्रातः 10 बजे से
स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, 3705 अर्बन अस्टेट, जीन्द, हरियाणा

इस सम्मेलन में स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्ना विकास मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली, स्वामी चन्द्रवेश जी टिटौली, स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, स्वामी विजयवेश जी गुड़गांव, स्वामी हरिदत्त उपाध्याय गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक, श्री सत्यव्रत सामवेदी जयपुर, प्रो. विट्ठलराव आर्य आन्ध्र प्रदेश, श्री बिरजानन्द आर्य राजस्थान, प्रो. श्योताज सिंह दिल्ली, श्री राम मोहन राय एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, राजकुमार गुप्ता एडवोकेट चण्डीगढ़, चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री हिसार, दर्शनाचार्या कन्या गुरुकुल खरल, चौ. बदलूराम, प्रधान आर्य समाज नागौरी गेट हिसार, बजरंग लाल आर्य हिसार, आचार्य सन्तराम रोहतक, लाजपत राय चौधरी, करनाल, चौधरी सूबे सिंह रोहतक, प्रकाशवीर विद्यालंकार रोहतक, बलबीर शास्त्री रोहतक, राजेन्द्र सिंह बिसला पूर्व विधायक, चौ. अजीत सिंह पूर्व विधायक, अतर सिंह आर्य वानप्रस्थी, चौ. बलवन्त सिंह आर्य सीसर खरबला, चौ. मेलाराम दिवाल कैथल, दर्शन सिंह आर्य कैथल, जगदीश सर्राफ भिवानी, डॉ. भूप सिंह भिवानी, लक्ष्मीचन्द आर्य फरीदाबाद, रामलाल आर्य गुड़गांव, महेन्द्र शास्त्री गुड़गांव, मोहित आर्य यमुनानगर, इन्द्रजीत आर्य प्रधान आर्य समाज नरवाना, जगदीश सींवर, सिरसा, जयपाल सिंह मलिक एनवाईके, प्रो. यशवीर शास्त्री, प्रिं. आजाद सिंह आर्य, चौ. सुभाष श्योराण इण्डस ग्रुप, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्रीमती जगमती मलिक आर्या, कुमारी प्रवेश आर्या, कुमारी पूनम आर्या, प्रसिद्ध भजनोपदेशक सहदेव सिंह बेधड़क, कुलदीप आर्य बिजनौर, हवा सिंह तूफान, सुनील शास्त्री उचाना आदि भजनोपदेशक, संन्यासी व नेता आमंत्रित किये गये हैं। भारी संख्या में पहुंचकर विद्वान वक्ताओं के विचार सुनें व धर्म लाभ उठायें।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं। संगठन का परिचय देते हुए भारी संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें। कम से कम एक वाहन साथियों से भरकर जरूर लायें।

संयोजक : स्वामी रामवेश, प्रधान नशाबंदी परिषद् हरियाणा
9416148278, 01681–248638

शारद एष चन्द्रः

– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

आद्यो महाकविरसौ भुवने प्रसिद्धः,
काव्येन नायकतमं परिकीर्त्त्य रामम्।
विस्मृत्य भूतमथ पश्य भविष्यमेव,
वाल्मीकिमिङ्गयति शारद एष चन्द्रः।।

पूर्वार्द्ध जन्म कृत कार्य कलङ्करूपम्,
अङ्के निगूह्य खग–शोक दया समुत्थम्।
वाल्मीकि काव्य रसधार सुधा स्वरूपम्,
ज्योतिर्ददाति भुवि शारद एष चन्द्रः।।

तातस्य जीर्ण वपुषोऽपिमनोविलोमम्,
आदेशमत्र तु निशम्य वने गतार्थम्।
हृष्टं शुभाननममुष्य तथैव दीप्तम्,
रामस्य भासयति शारद एष चन्द्रः।।

यः कांचनस्तु हरिणो विपिने विलुप्तः,
दृष्टः पुनश्च न कदाचिदहो! पृथिव्याम्।
अङ्के ममैव शरणं समवाप्य गूढः,
रामं विनोदयति शारद एष चन्द्रः।।

आतङ्कवाद भरिता नव–रावणास्ते,
भूमौ चरन्ति बहवः सततं निगूढाः।
आतङ्क पङ्कमिह नाशय मातुरङ्कात्,
रामं निवेदयति शारद एष चन्द्रः।।

शान्तं शिवं सुरभितं भुवि भारतं यत्,
सन्मार्ग दर्शकमिदं यदि मण्डलं मे।
'पाकः' कलङ्क इव सन्निहितो ममाङ्के,
इत्थं विभासयति शारद एष चन्द्रः।।

वस्त्रं नवीन धवलं परिधाय देहे,
नेता सुगोप्य हृदि रक्षति कालिमानम्।
तं चाऽपि मादृशमवेहि कलङ्कपूर्णम्,
सङ्केतयन् हसति शारद एष चन्द्रः।।

– पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, फिरोज गाँधी स्नातकोत्तर कालेज, रायबरेली, उत्तर प्रदेश

ONE EARTH, ONE GLOBAL FAMILY

The prevailing attitude of security and protection of my own country, my own religion, my own race, my own color and so forth, without due consideration for others, needs drastic change. We must grow above the differences of our petty-views and ideologies of political, racial, national, religious, Democrats, Socialists, Communists etc.

How can you enjoy peaceful sleep when you hear the crying of people who are being tortured, burnt, murdered and toasted in your neighborhood?

How can you sit quietly and experience pray and meditate, when you hear the lamenting voice of the dying men, women and children from your neighboring house?

How can you remain secured and peaceful when you see bombers, tankers and thousands of solders and polices with bullets, bombs and guns tied up on their bodies hastening all around, with their terrifying faces?

FUTURE OF THE WORLD

What is happening both good and bad in the world today, is the direct result of the kind of education we have been imparting to the children. If the future of the world is to be good and safe, we must think of the requirements of a proper guidance for the children. The future of the world depends on the children of today, and the children depend on the kind of education, guidance and inspiration we are giving them.

-Bhikkhu Sanghasena

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, उड़ीसा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर
एक निवेदन

मान्यवर!

पश्चिम ओडिशा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष चल रहा है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आर्यों का तीर्थ स्थल संस्कृति एवं संस्कार की रक्षा भूमि गुरुकुल आमसेना की स्थापना मार्च माह 1968 में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने की थी। स्थापना का वह समय इस क्षेत्र के सुदिनों के आरम्भ का समय था। विकट परिस्थितियों में स्थापित यह संस्था इस क्षेत्र की ही नहीं अपितु पूर्वोत्तर भारत की सर्वाधिक प्रशंसित एवं समाजसेवा में अग्रणी संस्था है। हजारों ब्रह्मचारियों ने यहाँ शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज की जो बहुमूल्य सेवा की उसका आंकलन हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। भारतभर में फैले आर्य जगत के समस्त समाजोपयोगी कार्यों तथा नागालैण्ड से लेकर राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तक फैली समस्त आर्य संस्थाओं में गुरुकुल के स्नातक समाज सेवा का अनूठा कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व जितना महान होता गया संस्था के कार्य भी उसी प्रकार विस्तारित होते गये।

सत्वे सिद्धिः भवति महतां नौपकरणैः।

स्वल्प साधनों के साथ आरम्भ हुई संस्था आज सर्वसाधनों से सम्पन्न, योग्य आचार्यों, कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, उपदेशकों की कर्मभूमि है। संस्था के कार्यों का विस्तार इस प्रकार हुआ कि 18 अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना स्वामी जी महाराज के कर–कमलों द्वारा नागालैण्ड, आसाम, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि प्रदेशों में हुई है।

समाजसेवा के प्रकल्पों में 100 बिस्तरों सहित आधुनिक चिकित्सालय, औषधालय, आयुर्वैदिक फार्मेसी, कृषि फार्म्स, बागवानी, साहित्य प्रकाशन विभाग, अन्न वितरण, वस्त्र वितरण, प्रचार विभाग, कन्या महाविद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में कन्या छात्रावास, गौसेवा केन्द्र, शुद्धि विभाग सहित आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन परम्परा के विद्यालयों की स्थापना प्रमुख हैं।

50 वर्षों के सिंहावलोकन के इस पुनीत अवसर पर आप संस्था के सहयोगीजनों को आमंत्रित करते हुए हमें हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। आपका आगमन इन कार्यों एवं ऋषि परम्परा के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा का द्योतक है। अभी से अपनी दैनन्दिनी में ये तिथियाँ लिख लीजिए। **23 दिसम्बर, 2017 से 25 दिसम्बर, 2017 तक आपका सादर निमंत्रण है।**

आइये! समस्त विश्व के आर्यबन्धु इस महान अवसर के साक्षी बन स्वर्ण जयन्ती उत्सव को सफल में अपना योगदान करें। आपके आगमन की प्रतीक्षा रहेगी। अपनी संस्था एवं इष्ट मित्रों सहित जरूर पधारियेगा। कुम्भ की शोभा बढ़ेगी, ऋषि परम्परा बढ़ेगी, ऋषि दयानन्द जी के स्वप्न साकार होंगे। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आपको स्नेह सहित निमंत्रण भेज रही है।

दर्शनाभिलाषी

माता परमेश्वरी देवी	स्वामी व्रतानन्दसरस्वती	रुद्रसेन सिन्धु	सुरेश अग्रवाल	डॉ. पूर्ण सिंह डबास	आचार्य वीरेन्द्र कुमार
प्रधाना	आचार्य	उपप्रधान	उपप्रधान	वरिष्ठ संरक्षक	मंत्री

गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, जिला–नवापारा, उड़ीसा–766109, मो.:–09437070541/615, 7873111213

।।ओ३म्।।
ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।। (यजु. 40–1)
धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत ।। मनु 8–15।।

अखिल भारतीय
वैदिक विरक्त मण्डल महासम्मेलन

स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली (रोहतक) हरियाणा

दिनांक – 6 व 7 जनवरी, 2018, माघ कृष्ण 5 व 6 वि. सं. 2074

सभी धर्म प्रेमियों, संन्यासियों, वानप्रस्थी व नैष्ठिकों से अनुरोध है कि महासम्मेलन में अवश्य पधारे और दिनांक 5 जनवरी, 2018 को ही सायं 5 बजे तक आश्रम पहुँच कर अपना पंजीकरण करा लें। सम्मेलन 6 जनवरी को प्रातः 7 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हो जायेगा। संन्यासी, वानप्रस्थी व नैष्ठिक महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपने साथ अपना पहचान पत्र अथवा आधार कार्ड अवश्य लावें।

कार्यक्रम

5 जनवरी, 2018 : सायं 5 से 6 बजे तक पंजीकरण
: 7 से 9 बजे तक संन्ध्या व भोजन
: 9 से 10 बजे तक संन्यासियों, वानप्रस्थियों व नैष्ठिकों की परिचय बैठक

6 जनवरी, 2018 : 8 से 9 बजे तक यज्ञ
: 9 से 10 प्रातराश
: 10 से 10.30 बजे तक ध्वजारोहण
: 10.30 से दोपहर 12.30 बजे तक भजन व व्याख्यान
विषय – वैदिक धर्मप्रचार की रूपरेखा।

दोपहर बाद
: 12.30 से 3 बजे तक भोजन व विश्राम
: 3 से 6 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन
: 6 से 8 बजे तक संन्ध्या व भोजन
: 8 से 10 बजे तक भजन व व्याख्यान
विषय– आर्य समाज की वर्तमान दशा व सम्भावी कार्यक्रम।

7 जनवरी, 2018 : 8 से 9 बजे तक यज्ञ
: 9 से 10 बजे तक प्रातराश
: 10 से दोपहर 12 बजे तक भजन व व्याख्यान
विषय – वैदिक संस्कार का प्रभाव व प्रचार।

दोपहर बाद : 12 से 2 बजे तक भोजन व विश्राम
: 2 से 3.30 बजे तक सम्मान समारोह, धन्यवाद व शांतिपाठ

निवेदक

स्वामी दिव्यानन्द	स्वामी आर्यवेश	स्वामी सोम्यानन्द
प्रधान	महामंत्री	संगठन मंत्री
9868593232	09013783101	9868720739

आर्य समाज करोलबाग, नई दिल्ली का 89वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज करोलबाग, नई दिल्ली का 89वाँ वार्षिकोत्सव 7 से 10 दिसम्बर, 2017 तक बड़ी श्रद्धा व उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर डॉ. रघुराज शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है। 7 दिसम्बर को दोपहर 12 से 4 बजे तक आर्य महिला सम्मेलन। 8 दिसम्बर, 2017 को रात्रि 7 से 9 बजे तक युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। 10 दिसम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा 11 से 1 बजे तक आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर धर्म लाभ उठायें।

– कीर्ति शर्मा, प्रधान

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सुसंस्कारों द्वारा ही स्वस्थ समाज का निर्माण सम्भव

– ओम प्रकाश आर्य

नैतिक शिक्षा प्रश्नोत्तरी परीक्षा का आयोजन किया गया

अमृतसर, 3 दिसम्बर, 2017 को वैदिक सांस्कृतिक विरासत सम्भाल कार्यक्रम के अन्तर्गत धार्मिक वैदिक ज्ञान प्रसार प्रश्नोत्तरी परीक्षा का आयोजन श्री ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की अध्यक्षता में किया गया। प्रथम आचार्य दयानन्द शास्त्री के संयोजन में नैतिक शिक्षा प्रश्नोत्तरी परीक्षा का शुभारम्भ ज्योति प्रज्ज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलन आर्य महिला परिषद् की प्रधाना सुलोचना आर्या, सुनीता पसाहन, नम्रता, कमलेश रानी, सुनीता वैद ने किया।

दीप प्रज्ज्वलन कार्यक्रम के उपरान्त नरेन्द्र आर्य, राकेश आर्या, भूपेश पसाहन ने भक्ति रस के भजनों द्वारा उपस्थित जन समूह को मंत्रमुग्ध किया।

उपस्थित बच्चों को सम्बोधित करते हुए श्री ओम प्रकाश आर्य ने बच्चों को संकल्प करवाया कि अपने जीवन में प्रतिदिन अपने माँ–बाप से आशीर्वाद लेकर ही अपनी दिनचर्या शुरू करेंगे तथा अपने धार्मिक शास्त्रों का स्वाध्याय करेंगे। उन्होंने कहा कि जीवन में अच्छे संस्कार आयेंगे तो ही स्वच्छ समाज और सुदृढ़ परिवार बनाया जा सकता है। इस नैतिक शिक्षा परीक्षा में लगभग 170 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर विजय कुमार आर्य, राज कुमार, अशोक वर्मा, नरेन्द्र आर्य, नरेश पसाहन, कमल, प्रिया वैद, रंजू, शशि अरोड़ा, कुसुम, नीलम पसाहन, कर्ण पसाहन, दीक्षा, पार्थ, अभिजीत आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में ऋषि लंगर वितरित किया गया।

– दयानन्द शास्त्री

जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम
दिल्ली चलो आर्यो दिल्ली आओ आर्यो फिर दिल्ली पहुंचों आर्यो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 39वें वार्षिकोत्सव

के उपलक्ष्य में वायु प्रदुषण व पर्यावरण शुद्धि हेतु

डा.अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व स्वामी आर्यवेश जी,
स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी के सान्निध्य में
251 कुण्डीय विराट् यज्ञ : आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 26, 27 व 28 जनवरी 2018 (शुकवार, शनिवार व रविवार)
स्थानः रामलीला मैदान, अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली–110052 (निकट कन्हैया नगर मैट्रो स्टेशन)

राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा

शनिवार, 27 जनवरी 2018, प्रातः 10.30 बजे

इस रचनात्मक कार्यकम में आपका तन,मन,धन से सहयोग अपेक्षित है,दान राशी चैक/ड्राफट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालयः आर्य समाज,कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी,दिल्ली–110007 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। यज्ञ हेतु घी,सामग्री, समिधा व ऋषि लंगर के लिये आटा, दाल, चावल, सब्जी, मसाले, दूध, रिफाईण्ड आदि से सहयोग कर पुण्य के भागी बने।

हजारों की संख्या में पंहुच कर आर्य समाज की विराट् शक्ति का परिचय दें व दिल्ली से बाहर के आने वाले आर्य जन अपने पंहुचने का समय व संख्या से अविलम्ब सूचित करें जिससे यथोचित आवास आदि का प्रबन्ध किया जा सके। यज्ञमान बनने के इच्छुक श्रद्धालु अपना स्थान शीघ्र सुरक्षित करवायें।

सम्पर्क करें:– देवेन्द्र भगत–9312406810, धर्मपाल आर्य–9871581398,
सन्तोष शास्त्री–9868754140, जीवनलाल आर्य–9718965775, काशीराम शास्त्री–9873454344,
सौरभ गुप्ता–9970467978, विकान्त चौधरी–9958728186, अरूण आर्य–9818530543

दर्शनाभिलाषीः

आनन्द चौहान	डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	प्रेमकुमार सचदेवा/सत्यपाल गांधी	देवेन्द्र भगत
संरक्षक	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	स्वागताध्यक्ष	प्रेस सचिव

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।
–ऋ:० ८/९६/७

ऋषिः–तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुतः।। देवता–इन्द्रः।। छन्दः–विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय–हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप–प्रलोभन के आते ही यह सब–का–सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव–समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा–सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े, एकल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप–विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े–बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी–बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं। आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती है, जब वह आत्म–संकल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र–गुणित होकर जल उठती हैं। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ–**इन्द्र**=हे आत्मन्! **विश्वे देवाः**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल–प्रदर्शन से **ईषमाणाः**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहुः**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

महामहिम उपराष्ट्रपति
श्री वेंकैया नायडू जी

'विश्व वेद सम्मेलन' का भव्य आयोजन

स्थान : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, 1–जनपथ, नई दिल्ली

दिनांक : 15, 16, व 17 दिसम्बर

आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि दिनांक 15 से 17 दिसम्बर, 2017 तक इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, 1, जनपथ, इंडिया गेट के पास, नई दिल्ली में 'विश्व वेद सम्मेलन' का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस सममेलन में भारत व विश्व के अनेक देशों से अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैदिक विद्वान् भाग लेंगे व विश्व के समक्ष विद्यमान वर्तमान चुनौतियों जैसे गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, मानव अधिकारों की रक्षा आदि के संदर्भ में वेदों की प्रासंगिकता के विषय में विचार–विमर्श कर एक वैदिक घोषणा पत्र जारी करेंगे। विश्व वेद सम्मेलन के कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

सम्मेलन की विशेषताएँ

1. भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री वेंकैया नायडु इस सम्मेलन का शुभारम्भ करेंगे।
2. मुस्लिम कन्याएँ पर्यावरण की शुद्धि हेतु वैदिक ऋचाओं के माध्यम से प्रतिदिन वैदिक यज्ञ का संचालन करेंगी।
3. देश–विदेश के उच्च कोटि के वैदिक विद्वान्, शिक्षाशास्त्री एवं वैज्ञानिक इसमें भाग लेंगे।
4. इस अवसर पर ऐसे 100 दम्पत्ति युगलों का, जिन्होंने वेदों के अनुसार जाति व्यवस्था के बन्धन को तोड़कर अन्तर्जातीय विवाह किया है, उन्हें सम्मानित किया जायेगा।
5. मांसाहार के बढ़ते प्रचलन को रोकने के लिये 20 होटल संचालकों को, जो केवल शाकाहारी भोजन कराते हैं, उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा।
6. वेदों की सार्वभौमिकता के अनुसार और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के अनुसार 'एक विश्व संसद, विश्व नागरिकता तथा पृथ्वी संविधान' का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाएगा।

आइये! इस नवीन इतिहास की संरचना के हम सब साक्षी बनें। अधिक से अधिक संख्या में पधारें।

आवश्यक सूचना

सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागियों का पंजीकरण कराना आवश्यक है जिसके लिए डॉ. देवेश प्रकाश आर्य से सम्पर्क करें। जिनका मोबाईल नं.–09968573439 तथा ई–मेल : dparya111@gmail.com है। अथवा विश्व वेद सम्मेलन के कार्यालय के फोन नम्बर–011–23363221, 23367946, ई–मेल : vishwaved2017@gmail.com वैबसाइट : vaidicworld.org से पंजीयन हेतु आवश्यक सूचना प्राप्त की जा सकती है।

स्वामी अग्निवेश अध्यक्ष
आनन्द कुमार, IPS (Rtd.) संयोजक

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।